

## न्याय—वैशेषिक का भौतिकशास्त्र

डॉ. दिवांशु कुमार

विश्वविद्यालय प्राध्यापक

स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग

जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा

जल, पृथ्वी, अग्नि और वायु इनके परमाणु होते हैं। इस प्रकार चार प्रकार के परमाणु होते हैं। इन परमाणुओं में द्रव्यमान, सख्या, भार, तरलता या कठोरता, श्यानता (चिप-चिपापन), अश्यानता, वेग, विशिष्ट वर्ण, स्वाद, गन्ध, स्पर्श होता है। आकाश निष्क्रिय एवं सरचना-हीन है अर्थात् इसमें न गति है न इसकी कोई विशेष बनावट। आकाश में शब्द-तरंग प्रवहमान होती है और वायु के माध्यम से ध्वनि प्रकट होती है। चार तत्त्वों के साथ ही आणविक संयोग सम्भव है। सृष्टिकाल में परमाणु स्वतन्त्र, असंबद्ध अवस्था में स्थित नहीं रह सकते। परन्तु ये परमाणु उच्चस्तरीय (ऊपर) वातावरण में असंबद्ध अवस्था में अवस्थित रह सकते हैं।

दो परमाणुओं के मेल से द्वयणुक का निर्माण होता है। दो-तीन चार या पांच द्वयणुकों के मेल से त्रयणुक, चतुरणुक आदि का संघटन होता है।<sup>1</sup> इस साधारण रूप से प्रचलित मत के अतिरिक्त डाक्टर बी. एन. सील अपनी पुस्तक "पोजिटिव साइन्सेज ऑफ दि एन्शियेन्ट हिन्दूज" में एक अन्य दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं। वे लिखते हैं कि सूक्ष्म अध्ययन से यह मत मिलता है कि 'परमाणुओं' में संघटित होने की स्वाभाविक क्षमता और रुचि है। और वे दो, तीन, चार के युग्म में सम्मिलित होते हैं अथवा पूर्ववर्ती परमाणुओं की संख्या के योग में एक और परमाणु के मेल से नया सन्निवेश या नया युग्म बनता है।<sup>2</sup> परमाणुओं के सम्बन्ध में धारणा है कि इनमें सतत स्पन्दन होता रहता है। इस सम्बन्ध में यह भी ध्यान रखना आवश्यक है कि सारे व्यापार के पीछे अदृष्ट को नहीं भुलाया जा सकता। इस अदृष्ट के कारण ही परमाणु स्पन्दित होते हैं, उनमें गति होती है और उनके अनेक सन्निवेश या युग्म बनत हैं। यह अदृष्ट, ईश्वर की इच्छा से प्रेरित हुआ संसार को नियमित रूप से धर्मानुकूल संचालित करता है, इस ऋतु के अनुकूल ही विश्व की व्यवस्था का नियमन होता है। यह नियमन अथवा ऋतु, कर्म फल के सामंजस्य में सृष्टि-प्रक्रिया को अनु-चालित करता है। भौतिक दृष्टि से किसी भी परमाणु के संयोग से बने साधारण द्रव्य में ताप के प्रभाव से गुणात्मक परिवर्तन हो सकता है। ताप के प्रभाव से द्वयणुक में परमाणु विघटन सम्भव है और इस विघटन के कारण और पुनः ताप के कारण उस युग्म के स्व-भाव या गुण में परिवर्तन होता है। अणु विघटित होकर नए युग्म बना लेते हैं और इस प्रकार नए सन्निवेशों अथवा गुणों की उत्पत्ति होती है। वैशेषिक का मत है कि ताप के कारण पहले किसी भी अणु युग्म का विघटन प्राथमिक

परमाणुओं से होता है, फिर आणविक गुणों में परिवर्तन होता है और फिर अन्तिम संघटन होकर सन्निवेश का निर्माण होता है। इस सिद्धान्त को 'पोलुपाक' (अणु को ताप देना) सिद्धान्त कहते हैं। न्याय का मत है कि ताप से परमाणुओं का विघटन हो, यह आवश्यक नहीं है। केवल अणुयुग्मों के गुण स्वभाव में आवश्यक परिवर्तन हो जाता है। इस प्रकार न्याय के अनुसार ताप परमाणुओं में किसी प्रकार का परिवर्तन न करते हुए अणु युग्मों को सीधा प्रभावित करता है और उनके गुण स्वभाव में परिवर्तन कर सकता है। ऊष्मा के सूक्ष्मकण द्रव्य के सरंध्र पिण्ड में प्रवेश कर उसमें वर्णपरिवर्तन कर देते हैं। इस प्रक्रिया में सारे द्रव्य का परमाणुओं में विघटन नहीं होता क्योंकि अनुभव और परीक्षण से ऐसा नहीं पाया जाता। इस प्रक्रिया को 'पिठरपाक' (अणु को नरम करने की क्रिया) सिद्धान्त कहा जाता है। उत्तरकालीन न्याय दर्शन और वैशेषिक में कुछ थोड़े से ऐसे सन्दर्भों में साधारण अन्तर पाया जाता है<sup>3</sup>

एक ही 'भूत' या अनेक 'भूतों' (पृथ्वी, जल आदि) के परमाणुओं से रासायनिक यौगिक बनाना सम्भव है। न्याय के दृष्टिकोण से एक ही भूत के परमाणुओं में कोई अन्तर नहीं होता। एक ही भूत के यौगिकों में जो गुण स्वभाव का अन्तर पाया जाता है वह इन परमाणुओं के विभिन्न समूहात्मक संयोगक्रम के कारण दिखाई देता है। उद्योतकर का कथन है (3.1.4) कि जौ और चावल के दाने में पाए जाने वाले परमाणुओं में कोई अन्तर नहीं है क्योंकि वे दोनों ही एक भूत पृथ्वी तत्त्व से निर्मित हैं। ताप के सतत प्रभाव के कारण परमाणुओं के स्वभाव में परिवर्तन होता रहता है। रंग, रूप, वर्ण, रस (स्वाद) आदि का एक ही भूत के परमाणुओं में जो परिवर्तन होता है, उसका एक मात्र कारण ताप है। ताप की मात्रा 'तेजस्' कणों के प्रकार और सम्पर्क में जाने वाले द्रव्यों के स्वभाव के अनुसार वर्णादि में परिवर्तन होता है। परिपाक (तापक्रिया) से द्रव्य परमाणुओं में खंडित होकर नवीन रूप और गुण वाले द्रव्यों में परिवर्तित हो जाता है।

वैशेषिक के भाष्यकार श्री प्रशस्तपाद का मत है कि एक भूत के उच्चस्तरीय यौगिकों में आन्तरिक ऊष्मा (ताप) के कारण जो परिवर्तन होता है वह यौगिक अणुओं में न होकर इसका निर्माण करने वाले घटक परमाणुओं में होता है। जब दूध दही में परिवर्तित हो जाता है तो दूध के परमाणु में यह परिवर्तन होता है। आवश्यक नहीं है कि दूध के अणुओं का विघटन होकर उनका परिवर्तन मूलभूत परमाणुओं में हो जाए। इस प्रकार परिवर्तन दुग्ध परमाणु में होता है। दुग्धाणु की क्षिति परमाणु में विघटित होने की आवश्यकता नहीं होती। इसी प्रकार संसेचित-अंडाणु (ओवम) में, जीवाणु और अंडाणु द्रव्य, संभागी क्षिति परमाणुओं में विभाजित होकर शारीरिक ऊष्मा एवं प्राणवायु के प्रभाव से नवीन रासायनिक यौगिक जीवाणु का ('कलल') रूप धारण करते हैं। वैशेषिक दर्शन के अनुसार जीवाणु एवं अंडाणु द्रव्य दोनों ही क्षिति के समवायी तत्त्व हैं जिसमें अन्य भूतों का भी समावेश है। जब जनन द्रव्य (बीज) विकसित होने लगता है और अपना भोजन माँ के रुधिर से प्राप्त करने लगता है तो शारीरिक ऊष्मा जनन-द्रव्य के अणुओं को खंडित कर घटक परमाणुओं में बदल देती है। ये घटक जनन द्रव्य परमाणु आहार

संरचक परमाणुओं के साथ रासायनिक मिश्रण द्वारा कोशिकाओं और ऊतकों (टिशू) का निर्माण करते हैं।<sup>4</sup> परमाणुओं के इस योग को 'आरम्भ संयोग' कहते हैं।

बहु-भौतिक या द्वि-भौतिक यौगिकों में एक अन्य प्रकार का संयोग होता है जिसे 'उपष्टम्भ' योग कहते हैं। इस प्रकार तेल, घी, फलो के रस आदि में पृथ्वी के परमाणु तब तक नहीं मिल सकते जब तक कि जल के परमाणु बीच में न हों। ये जल के परमाणु पृथ्वी के परमाणुओं को घेरे रहते हैं। ऊष्मा कणों के संघात से और अवपरमाणविक बल के कारण पृथ्वी के परमाणु विशिष्ट गुणों को धारण करते हैं। इसी प्रकार अन्य यौगिकों का भी निर्माण होता है जहाँ अप (जल), तेजस् और वायु के परमाणु आन्तरिक मूलांकुर वा केन्द्र के रूप में अवस्थित होते हैं और पृथ्वी के कण उपष्टम्भक के रूप में आस-पास स्पन्दित होते रहते हैं। पृथ्वी तत्त्व के जल में मिले इस प्रकार के सम्मिश्रण या घोल भौतिक-मिश्रक कहलाते हैं।

उदयन का मत है कि रासायनिक प्रक्रिया के लिए आवश्यक सारी ऊष्मा का स्रोत सूर्य का ताप है। परन्तु परिपाक क्रिया में अन्तर है। ताप के सूक्ष्म कणों के सम्पर्क और ऊष्मा के प्रकार विभिन्न हैं। जिस पाक क्रिया से वर्ण परिवर्तन होता है और जिससे रस परिवर्तन होता है वे निश्चय ही एक-दूसरे से भिन्न हैं।

ऊष्मा और प्रकाश की किरणें अत्यन्त सूक्ष्म कणों से बनी हुई होती हैं। ये तीव्र गति एवं वेग से ऋजु रेखीय स्तर पर मारी दिशाओं में प्रवाहित होती हैं। ताप परमाणु सन्धि में सहज ही प्रवेश कर जाता है जैसा तापचालन की क्रिया में पाया जाता है। अग्नि पर पात्र में जब जल गरम किया जाता है तो पात्र के परमाणुओं की सन्धि में प्रवेश कर ताप जल तक सहज ही पहुँच जाता है। प्रकाश किरणें पारदर्शक पदार्थ में 'परिस्पन्द' के द्वारा परमाणु सन्धि से प्रवेश कर विक्षेप अथवा अपवर्तन की अवस्था को प्राप्त करती हैं जिसे 'तिर्यक्गमन' कहा है। अन्य अवस्थाओं में ऊष्मा या प्रकाश की किरणें परमाणुओं से टकराकर प्रत्यावर्तित हो जाती हैं।

ताप की विशेष क्रिया से अन्य अवस्थाओं में परमाणु छिन्न-भिन्न होकर विघटित हो जाते हैं। निरन्तर परिपाक से इन विघटित परमाणुओं के भौतिक रासायनिक गुणों में परिवर्तन हो जाता है और इनका पुनः संयोग संघटन होकर नवीन रासायनिक द्रव्यों का निर्माण हो जाता है।<sup>5</sup>

उत्तरकालीन नैयायिक गोवर्धन का कथन है कि 'पाक' का अर्थ विभिन्न प्रकार की ऊष्मा का प्रभाव है। वह ऊष्मा जिससे फल के रंग में परिवर्तन होता है, उस ऊष्मा से भिन्न है जिसके द्वारा रस में परिवर्तन होता है।

गाय के द्वारा खाया हुआ घास सूक्ष्म परमाणुओं में बदल जाता है और फिर ऊष्मा प्रकाश के प्रभाव से उसके रस, रूप, गन्धादि में अनेक रासायनिक परिवर्तन होते हैं जिससे यह दूध के रूप में परिवर्तित हो जाता है।<sup>6</sup>

न्याय वैशेषिक दर्शन में द्रव्य की अन्य द्रव्य पर क्रिया एक भौतिक गति क्रिया है। प्रयत्न और गति दोनों में अन्तर है। सांख्य की दृष्टि इसके विपरीत है। सांख्य के अनुसार 'पुरुष' के अतिरिक्त (चित्) अन्य सब पदार्थ सृष्टि के विकास के क्रम में उत्पन्न होते हैं और उनमें स्वतः स्पन्दन होता रहता है।

**संदर्भ –**

1. न्याय कंदली पृ० 32
2. 'बृहत् संहिता' पर उत्पल भाष्य – 11.7
3. (i) डॉ० पी०सी० राय – हिन्दू कैमिस्टो में डॉ० बी०एन०सील का मत पृ० 190–191
- (ii) न्याय मंजरी पृ० 438
- (iii) उद्योतकर की 'वार्निक'
4. डॉ० बी० एन० सील की 'पोजिटीव साइन्सेज' पृ० 104–108
- (i) न्याय कंदली पृ० 33–34
5. डॉ० बी० एन० सील – पोजिटीव साइन्सेज ऑफ हिन्दूज
6. गोवर्धन रचित – 'न्यायबोधिनी' टीका पृ० 9,10 जो तर्क संग्रह पर लिखी गई है।